प्राचीन स्तवनावली

संशोधक व संग्राहक,

यति श्रीरामपालजी

प्रकाशक—

उमरावसिंहजी डूंगरिया।

(श्रीमाल) देहली,

वीराद्ध २४५६ विक्रमाद्ध १६८६

प्रथमवार १०००] [मूल्य सप्रेम पठन

विक्टोरिया क्रास प्रेस, दरियागंज देहली,

में मुद्रित हुई।

लाला हजारीमलजी डूंगरिया (श्रीमा

जन्म संवत् १९४१,] [मृत्यु संवत् १९७६,

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

❀ भूमिका ❀

इस छोटी सी पुस्तक को आपके सम्मुख रखने का मुझे जो साहस हुआ है, उसके हेतुभूत उमरावसिंह जी (टांक) वकील हैं। क्योंकि एक दिन मुनिहरिसागरजी के पास उक्त महाशय बैठे थे, उस समय मैं भी उपस्थित था। तब क्षमा कल्याण जी चिदानन्द जी और आनन्दघनजी की कृतियों का ज़िक्र चल रहा था। उसी समय उमरावसिंहजी ने फर्माया कि श्रीरंगसूरिजी से लेकर अद्यावधि जितने भी आचार्य लखनऊ की गादी के कहलाने वाले हुए. उन सबकी कृतियां देखने में नहीं आतीं। दो एक स्तवन रंगसूरिजी कृत दादाजी महाराज के स्तुति रूप नज़र आते हैं, और कोई कृतियां व उनका इतिहास मालूम नहीं देता उस वक्त मेरे हृदय में गहरी ठेस लगी कि क्या हमारे आचार्यों की कृतियां कुछ भी नहीं हैं, इसी कारण मैंने उनकी कृति की गवेषणा की। उस गवेषणा के करने पर इतनी कृति याने जितने स्तवन दोहे श्रीरँगसूरिजी महाराज, नन्दीवर्द्धनसूरिजी व कल्याणसूरिजी महाराज कृत हैं, उनको आप लोगों के सामने पेश करता हूँ। मुझे आशा है कि श्रीरँगसूर्यादि की और भी कृतियां शोध करने से उपलब्ध हो सकेंगी और उनको आपके सामने लाकर यह दिखला देना चाहता हूँ कि यह आचार्य भी प्रभाविक, विद्वान् और आत्म शोधक हुए हैं।

इस पुस्तक में सब से पहिले मङ्गलाचरण रूप में गुण सूरि जी कृत नवकार छन्द दिया गया है। इसके अतिरिक्त

शेष सब श्रीरँगसूरिजी नन्दीवर्द्धनसूरिजी व कल्याणसूरि जी कृत स्तवन दोहे हैं। इतिहास के बारेमें मैं इतना ही लिख देना चाहता हूँ कि बहुतसी सामग्री मुझे मिल चुकी है आदि से लेकर अन्त तक जब मेरे पास एकत्रित होजावेगी, उस समय आपके सम्मुख जो २ कार्य किये हैं और वे किस आचार विचार से चलते थे, जैन समाज में क्या उज्वल उदाहरण रखके गये थे, इन सब का विवरण सविस्तार रखने का साहस करूँगा।

इस पुस्तक के छपवाने का सारा श्रेय उमराव सिंह जी डूँगरिया (देहली) निवासी को है। क्यों कि उनके पिता का दान फण्ड था, उसको अच्छे कार्य में लगाने के लिये मुझसे कहा। मैंने भी अपना आशय इस पुस्तक के छपवाने का प्रगट किया। तब उन्होंने अपने पिता जी के दान फण्ड में से देना स्वीकार कर अपनी उदारता का परिचय दिया। इस पुस्तक के प्रारम्भ में ही आप लोग आपके पिताश्रीके फोटू का अवलोकन करेंगे, उनके पुत्र रत्न उमरावसिंह जी दौलतचन्द जी सहृदय न्यायप्रिय व समाजप्रेमी हैं। अतः समाजके नवयुवकों को इनका अनुकरण करना चाहिये। इस पुस्तकके प्रूफसंशोधन में यदि कोई त्रुटि रही हो तो पाठकगण मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

अक्षय तृतीया
देहली

लेखक—
यति रामपाल।

❀ प्राचीन स्तवनावली ❀

॥ नवकार छन्द ॥

सुख कारण भवियण समरूं श्री नवकार। निज शासन आगम चउदे पूरब सार। इण मंत्रनी महिमां कहतां न लहुँ पार। सुर तरु जिम चिन्तित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करै कर जोड़ भूमण्डल विचरै तारै भवियण कोड। सुर छुंदे विलसै अतिसय जास अनन्त, पहिले पद नमिये अरि गंजन अरिहन्त ॥ २ ॥ जे पनरै भेदे सिद्ध थया भगवंत पंचमी गति पुहता, अष्ट करम करि हंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक जेह, जिन वर पाय प्रणमूँ बीजै पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छ भार धुरंधर सुन्दर ससिहर सोम, करि सारण वारण, गुण छत्तीसं थोम ॥ श्रुत जाण शिरोमणि सागर जेम गँभीर, तीजे पद नमिये, आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विधि संयोगे भाषै अरथ विचार ॥ मुनिवर गुण युत्ता ते कहिये उवझाय, चौथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पँचाश्रव टाले, पालै पंचाचार तपसी गुणधारी, वारैं विषय विकार ॥ तस थावर पीहर लोक मांहे जे साधे त्रिविधै ते प्रणमूँ परमारथ गुण

लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण, डायण भूत वेत्ताल, सब पाप पणासे थासे मंगल माल ॥ इण समर्यां संकट, दूर टले तत्काल जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री पार्श्वनाथाष्टकम् ॥

श्रीमद्देवेंद्रवृंदामलमणिमुकुटज्योतिषांचक्रपाले व्यालीढं पाद् पीठं शठ कमठकृतोपद्रवाबाधितस्य ॥ लोकालोकावभासैः स्फुरदुरुचिमलज्ञान सद्यःप्रदीपः प्रध्वस्त ध्वांतजालः सवितरतु सुखं पार्श्वनाथस्य नित्यं ॥ १ ॥ ह्रूँ ह्रीं ह्रुँ ह्रैं विभाव स्वन्म-रकतमणि भा क्रांत मूर्तेहि चंग हंसं तं बीज मंत्रैः कृत सकल जगत् त्तेम रत्तो रुवत्तः॥ त्तां त्तीं त्तूँ त्तै समस्त क्षितिदल मिहितः ज्योतिरुद्योतितार्थः त्तैं त्तों त्तौं त्तुं त्तः बीजात्मक सवितनुतां वः सदा पार्श्वनाथः ॥ २ ॥ ह्रींकारं रेफ युक्तं र र र र र र रा देव सं संयुगं तं ह्रीं क्लीं ब्लूँ ह्रीं सुरेफं वियदमल कलापंचकोद्भासः ॥ मत्पुष्ल वर्णैरखिलमिह जगन्मे विदहृया नु कृष्टं वौषट् मंत्रं पठंतं त्रिजगदधिपते पार्श्वं मां रत्त नित्यं ॥ ३ ॥ उँ क्रों ह्रीं सर्वं वश्यं कुरु २ सर संक्रामणं तिष्ठ तिष्ठं त्तूँ ह्रूँ ह्रं रत्त २ प्रबल बल महाभैरवांराति भीतेः ह्रूँ ह्रीं ह्रुँ द्रावय २ हन २ वौषट् बँध २ स्वाहा मन्त्रम् पठंतम् त्रिजगदधिपते पार्श्वं मां रत्त रत्त ॥ ४ ॥ हं भं भत्री द्वीं स हंसः कुवलय कलितैं रंजितांग प्रसूनैः भवाँ भवँ हः हं हं हर हर हर हूँ यः त्तयः त्त प्रकोपं ॥ वं भं हं सं पावं भः सर सर सर सौं सं स सु बीज

मंत्रैस्त्रायस्व स्थावराद्रि प्रबल विष सु संहारिभिः पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥ क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मौं क्ष्मः क्षपतैरहिपतिनुत मंत्राक्षरा रैः सनित्यं हा हा कारोग्रनादैर्ज्वलदनल सिरराकल्प दीर्घोर्द्धि केशैः ॥ पिंगाक्षैःलोल जिह्वैर्विषम विषधरालंकृतैस्तीक्ष्ण दंष्ट्रैः भूतैः प्रेतैः पिशाचैरनघकृत महोपद्रवाद्रक्ष रक्ष ॥ ६ ॥ ॐ भ्रौं भ्रः शाकिनीनां सपदि हर मदं भिन्द्धि शुद्धद्ध बुद्धैः ग्लौं क्ष्मं तं दिव्य जिह्वा गति मति कुपिता स्तंभनं सं विधेहि फट् फट् फट् सर्व रोग ग्रहमरणभयोच्चाटनं चैव पार्श्वः त्रायस्वा शेष दोषा डुमरनरवरैर्नूतपादारविंदः ॥ ७ ॥ इत्थं मं० त्राक्षरोत्थं वचनमनुभवं पार्श्वनाथस्य नित्यं विद्वेषोच्चाटन स्तंभन जय वश कृत्याररो गांपनादि ॥ प्रोत्सर्प्य जङ्गम स्थावर विषमविषध्वंसन स्वायुरारोगैश्चायं पादभक्त्या स्पृशति पठति यः स्तौति तस्येष्ट सिद्ध्यैः ॥ ८ ॥ इति सप्रभावकमष्टकं समाप्तम्

॥ चौबीस जिन स्तुति ॥

पहिलो श्री रिसहेसर प्रणमूँ, दूजो अजिय जिणेसर देव । संभव अभिनंदन सुखदाई सुमति सुमति सुर सारे सेव ॥१॥ पहि० ॥ पद्म प्रभु जिन अधिक पंडूर, श्री सुपास चन्द्रा प्रभु स्वामि ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सवाई, नित प्रणमूँ वासु पूज्य सिरनामि ॥ २ ॥ पहि० ॥ विमल अनन्त सदा वरदाई, धर्म्म शांति कुँथु अर धरि राग । मल्लिनाथ ते श्री

मुनिसुव्रत, नमि नमि नेमि सदा दुखते वारे, ताके नमूँ पाये लाग ॥ ३ ॥ पहि० ॥ परतिख जेहनो दीसे परचो, पुरसादाणी समरूँ पास ॥ वर्धमान चउवीसम जिनवर, जगि जागे जेहनो जस वास ॥ ४ ॥ पहि० ॥ परम पुरुषनां नाम जपतां, कीधा करम खपे लख कोडि ॥ भाव सहित उठि परभाते जिन रंगसुरि नमें कर जोडि ॥ ५ ॥ पहि० ॥ इति ।

॥ अथ गौडी पार्श्व जिन स्तवन ॥

अरज करूँ कर जोड़िनें जी, आणी मन उल्लास, निज सेवक जाणि करी जी, पूरज्यो मुझ मन आस ॥ १ ॥ जिनेश्वर सांभलगौड़ीजी पास ॥ टेक ॥ दूर थकी मन मांहरोजी, देखन तुम चरणेय मनडो छे तुम्ह पास ॥ २ ॥ जिने० ॥ ध्यान धरे मन माहरोजी, पिण मेलो किण विध हुवे जी जां लग छे अन्तराय ॥ ३ ॥ जि० ॥ थे निस्नेही होय रह्या जी नाणो मोह लगार ॥ हूँ सस्नेही तुम भणी जी समरूँ बारम्बार ॥ ४ ॥ जि० ॥ चम्पक लोहतणी परेंजी एक पखीया प्रीत ॥ पावस मन आंणे नहीं जी, चातक चाहे चित्त ॥ ५ ॥ जि० ॥ स्वप्न मैं देखूँ सदा जी, परतिख देखूँ तेम ॥ हरषित मन मेरो हुवै जी, बूठें जलधर जेम ॥ ६ ॥ जि० ॥ परतिख परचो ताहरोजी, सहु जाणे संसार ॥ मन शुद्ध पूजें तिकेजी, धन्य तिणरो अवतार ॥ ७ ॥ जि० ॥ जन मुख गुण तुम सांभलीजी, खरीय मिलनरी हौंस ॥ मुझ मन पिण हुलसे घणोंजी झूँठ कहूँ तो

सीस ॥ ८ ॥ जि० ॥ गौड़ीपारसनाथसेंजी लाग्यो मो मन रँग ॥ श्रीजिनराज पसाउले जी जम्पे श्रीजिन रँग ॥ ६ ॥ जि० ॥ इति ।

राग वेलाउल ।

जब आदीश्वर सेविये तब सब बन आवै । सुख संपति आनन्द घणां, घर बैठा ही पावे ॥ १ ॥ जि० ॥ स्नात्र महोत्सव सासता पंच शब्द बजावे । केसर चन्दन कुमकुमा घसि अङ्ग लगावे ॥ २ ॥ ज० ॥ चम्पा मरुआ केतकी, जाई जूई बणावे । पाड़ल दमणो केवड़ो, गूँथि माल चढ़ावे ॥ ३ ॥ ज० ॥ चोवा मृगमद अरगजा परिमल महकावे । प्रभु आगल करे आरती भले चमर दुलावे ॥ ४ ॥ ज० ॥ श्री जिनराज सदा जयो मंगल बहु गावे । रंग सूरि गुणगावतां सब जीव सुहावे ॥ ५ । ज० ॥ इति ।

॥ पार्श्व जिन स्तवन ॥

राग सामेरी ।

भविक जन ते धन जे जिन पूजे । पास जिणेसर नयणें निरख्या चित्त न लागत दूजे ॥ १ ॥ भवि० ॥ परमानन्द उपजत प्रभु नामें जैसे साकर कूँजे । पद पङ्कज जे सेवक सेवे तिणथी पातक धूजे ॥ २ ॥ भवि० ॥ अविचल लाछि हुवइ घर आँगण साहिब होय भूँजे । रंग सूरि प्रभु चरण सरण करि चाहत मुक्ति वधूजे ॥ ३ ॥

॥ शांति जिन स्तवन ॥

राग भैरवी ।

शांति जिणेसर सांचो साहिब शांति करण इण कलिमें ।
निर्मल ज्योति वदन प्रभु शोभित निकसा चन्द बदल में ॥ १ ॥
भव भव भमतां दरसण पायो इच्छु उगी मरुस्थल में ॥ २ ॥
मेरो मन प्रभु तुमसों लाग्यो ज्यों जलचर मीन जल में ॥ ३ ॥
जिन रंग के प्रभु शांति सवाई देखा देव सकल में ॥ ४ ॥

राग वसन्त ।

ऋषभ जिनेश्वर भेटियं हो प्राणी मन आणँद । दीठां दिलड़ो उल्लसे हो दिन दिन दीये आणंद ॥ १ ॥ आदीश्वर मेरे मन बस्यो हो आंकणी । नाभि नरेसर नंद ॥ चन्द किरण जिसो निरमलो हो दीपे सुन्दर देह । नर भव सफलो जेहनों हो निज कर पूजे जेह ॥ २ ॥ आदी० ॥ चोल तणी परे माहरो हो लागे प्रभु सुचित्त । चन्द चकोर तणी परे हो दिन दिन वधती प्रीत ॥ आदी० ॥ ३ ॥ मेरु शिखर जिसो देहरो हो सारा है संसार । मन वंछित आशा फले हो विक्रम पुर शृङ्गार ॥४॥ श्री जिन राज पसाउले हो लहिये अविचल राज । रंग सूरि चढ़ती कला हो दरसण दीठा हो आज ॥ आदी ॥ ५ ॥ इति ।

राग बसन्त ।

हां हां रे यमुना तट धूम मचाई है री माई, नेम सांवरो खेले होरी ॥ यमु० ॥ टेक ॥ दस दसाहँ ठाडे हैं घेरे नीकी

बनी है सुजन टोरी। नेम प्रभु को ब्याह मनावत बत्तीस सहस संग लिये गोरी॥ १॥ भर पिचकारी नेम मुख पर डारत श्रृंगी छुरत केशर घोरी। अबीर गुलाल को मंडप छायो भाल रचत चन्दन घोरी॥ यमु० ॥२॥ होरी वसन्त धमाल सुर गावत करत सेव यों झकझोरी। या उग्रसेन दुलारी विवाहो यों ही कहे भामां भोरी ॥ यमु० ॥ ३॥ मुसकाने प्रभु खेल देख के जग जँजाल दियो छोरी। अमृत पद दायक दम्पति सों रँग नमें दोउ कर जोरी॥ यमु० ॥ ४ ॥ इति।

॥ ऋषभ स्तवन ॥

ऋषभ जिणेसर भेटवारे लाल मो मन अधिक उच्छाह। सुखकारीरे देस छपन में दीपतोरे लाल गुण गिरुवो गज गाह ॥ सुख० १॥ ऋ० ॥ बाल गोपाल सहू करेरे लाल ऋषभ देवरी आण ॥ सुख०॥ अदभुत महिमा जेहनीरे लाल माने सहू राय राण ॥ सुख०। २ ऋ० ॥ नव खण्ड सन्ध्या अँगनारे लाल दीसै परतिख रूप ॥ सुख॥ दीठा कोई न दूसरोरे लाल इण युगल स्वरूप ॥ सुख० ॥ ३॥ ऋ० ॥ दूरथकी हूँ आवीयोरे लाल यात्रा करण जिनराज। सुख; कूरम नजर निहालीयेरे लाल महरकरी महाराज ॥ सुख० ॥ ऋ० ४॥ लांघ्या कब घट घाटजेरे लाल लांघी विषमी नाल ॥ सुख०॥ दरसण दीठे ताहरोरे लाल भांज गया जंजाल ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ निरखी मूरत सांवलीरे लाल

नयन भय लयलीन ॥ सुख० ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी रे लाल भेद गिणें मति हीन ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ जग में देव छे घणांरे लाल ते चित में न समाय ॥ सुख० ॥ मोयो मधुकर मालती रे लाल अवर न आवे दाय ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ ७ ॥ ध्यान धरे मन ताहरे सरे लाल जाप जपे दिन रात ॥ सुख० ॥ दरसण देखे भावसूंरे लाल पूजा करै प्रभात ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ ८ ॥ पावे पूत अपूतियारे लाल धन हीणा धन होय ॥ सुख० ॥ रोग शोक सगला टलेरे लाल गंज न सक्के कोय ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ तारै भवसागर थकीरे लाल टालै गरभावास ॥ सुख ॥ अजर अमर पदवी लहैरे लाल विलसै लील विलास ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ १० ॥ तू गति तूं मति तूं धणी रे लाल तू बान्धव तूं सित्त ॥ सुख० ॥ इण तीरथ दीठां थकोरे लाल आयो विमल गिरि चित्त ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ ११ ॥ हूँ गिरुवो हूँ गुण निलोरे लाल हूँ हुवो आज सनाथ ॥ सुख० ॥ समकित कीधो निरमलांरे लाल लाधो मुक्तिनो साथ ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ १२ ॥ भाव भले वर्धमान सूंरे लाल पूजा कुसुम कपूर ॥ सुख० ॥ देव दत्त वर प्रभाव सूंरे लाल ज्ञान भक्ति भरपूर ॥ सुख० ॥ ऋ० ॥ १३ ॥ जागी पुण्यतणी दशारे लाल जो भेट्या देव जिनराज ॥ सुख० ॥ तूठो देव त्रिभुवन धणीरें लाल सेवकनें शिवराज ॥ सुख० ॥ ऋ० १४ ॥ मुनिवर गुण सतरेसमैंरे लाल मगसिर मास रसाल ॥ सुख० ॥ श्री जिन रंग पसावलेरे लाल फलीय मनोरथ माल ॥ सुख ॥ ऋ० ॥ १५ ॥

॥ पार्श्व जिन स्तवन ॥

सांभल हो साहिब माहराजी एक करूँ अरदास । पुण्य अँकूर हिव जागियो जी आवीयो पास जी पास । सां० । १ । हिवस्युं हिवे वात कहूँ जेहनी जी, जेह जाणे नहीं धात । अन्तरजामी आपणूँ जी, जिन कहूँ मन तणी बात । २ । सां० । देहरे २ देवता जी, कोन थी ताहरी जोड़ । काचते मोल महँगो घणो जी, कुण करे पाचनी होड । ३ । सां० । अवगुण एक लाभे नहीं जी, गुण घणां ताहरी देह । पर उपकार सहजे करोजी, उत्तम नर अनमेह । ४ । सां० । अलख अगोचर तूं सही जी, सकल तू अकल सरूप । कुण संसार में एहवोजी जे लिखे ताहरो रूप । ५ । सां० । देव बिना नी चाकरी जी जेहवी निगुणनी बांह । तुझ सेवा साता भणी जी, जिम सुरतरुनी छांह । ६ । सां० । कास रस मन गमे जां लही जी, तांलग नवि जुडे ईख । जाण नर जाणि विष कुण पिये जी, जल्दी ही को पिये ईख । ७ । सां० । ताहरा दरसण बिना जी, हूँ भम्यो सकल संसार । आठ करमाने बस पड्यो जी ऊँचने नीच अवतार । ८ । सां० । जाण अजाण पणें कर्या जी, आज लग आचर्या पाप । भक्त निज जाणि बगसिये जी, ज्युं टले सकल सँताप । ९ । सां० । नहीं कठिन करणी करी जी, किम होसी छूटकार । पिण धणी सबल तो सारिखोजी, एकलो एह

आधार । १० । सां० । प्रभु तणां चरण भेट्यां पछे जी, अवर न कोई दाय । लाख रो लाल पहिरे जिके जी, फूट रो स्फटिक न सुहाय । ११ । सा० । रतनं चिन्तामणी दोहिलोजी, पारस किहां मिले आज । नमिने नाम बेहू मिल्या जी, माहरे हाथ महाराज । १२ । सां० । धन घडी धन दिवस मास तेजी, वरस पिण धन गिणूँ तेह । इहां कैसे दरसण ताहरोजी निरखीये नयण धरि नेह । १३ । सां० । एहवो ध्यान रहज्यो सदा जी, रात दिन माहरेजी चित्त । समकित कारण तूं सही जी, यह मुझ अधिक प्रतीत । १४ । सां० । परतिख पास चिन्तामणी जी, वरकाणापुर जाण । श्री जिन रंग गुण गावतां जी, जीवित जन्म प्रमाण । १५ । सां० ॥ इति ॥

॥ दूहा बहत्तरी ॥

लोचन प्यारे पलक कूं करदो बल्लभ गात । जिन रंग सज्जन ते कहत्या और बात की बात ॥ १ ॥ ज्ञानी को मन स्फटिक सों जिन रंग सज्जन दाख । मन कपटी अरु नारि को ज्यों गहणा की लाख ॥ २ ॥ अपना अपना क्या करे अपनो नाहि शरीर । जिन रंग माया जगत की ज्यों अँजली को नीर ॥ ३ ॥ जग में प्रेम अनूर है जइकर जाणे कोय । जिन रंग परजन सुं मिल्या कब हूँ प्रेम न होय ॥ ४ ॥ गरुआ सहिजें गुण करे कदे न दाखे छेह । कुण निपावे सरभेर कुण कारण कहुँ मेह ॥ ५ ॥ जिन रंग दोष न दीजिये देख

जगत का पास। जैसी भांड बसन्त है, तैसी आवत बास। जग में अपणो कोई नहीं सब स्वारथ के मित्त। जिन रँग सहज स्वरूप में धरीये अपणो चित्त ॥ ७ ॥ ज्युं पानी में पड़त ही प्रगटै पातन कोर। जिन रंग जीव की सज्जनता उघत आंख न ओर ॥ ८ ॥ जोरे प्रीति जुड़े नहीं जोरे मेह न होय। जोरे फल लागे नहीं जिन रंग सहजें जोय ॥ ६ ॥ भली सीख नर भीति ने सीखत चतुर सुजाण। जिन रङ्ग सज्जनताई भली सीखत नांहि अयाण ॥ १० ॥ जाके जीव में डर नहीं अरु कछु नहीं सनेह। जिन रंग ऐसे मनुष्य तें भली धरी पशु देह ॥ ११ ॥ जाके जी में डर बसे अरु कछु बसे सनेह। जिन रंग उन देवतान की भली धरी नर देह ॥ १२ ॥ जिन रंग रोटी मित्र को दीजे रोटी घीव। वचन मित्र को वचन दे जीव मित्र को जीव ॥ १३ ॥ जिन रंग पन्थ सुपन्थ लइ जिन चालत सुख होय। शील सन्तोषे बहुत यौं पड्यो न दीठो कोई ॥ १४ ॥ जिन रंग धरम बिना किये कहो सुख पावे कौन। बसत रही पूरब दिसी पश्चिम कीनो गौन। १५। जिन रंग पररमणी तणो रंग विलग्गड्ड जाय। ईरत भय भागा नहीं परत गमायो तांह ॥ १६ ॥ शशि पन्थी मुख श्याम हुय तातें कही न राह। जिन रंग दान जतन किये उपजत अङ्ग उच्छाह। १७। दसूँ द्वार का पींजरा आनम पंखी मांहि। जिन रंग अचरज रहत है गये अचम्भा नांहि ॥ १८ ॥ सजि श्रृँगार मन्दिर चढ़ी जिन रंग चातुर तीय।

कानन पंखी शब्द सुनी कैसे मिलियन पीय ॥ १६ ॥ जैसे बीतत यामिनी जिन रंग उद्यत सूर। तैसे स्थिति पूरण भई प्रगटै आतम नूर ॥ २० ॥ जिन रंग दोष न दीजिये किसी को एकन्त। करना किसके हाथ है उदय महा बलवन्त। २१। जैसे को शुभ नगर मग पहुँचण मग लेत। तैसे या व्यवहार सों जिन रंग धरीये हेत ॥ २२ ॥ जब लग है संसार में तब लग है व्यवहार। धरीये निश्चय ठीकता करीये शुभ व्यवहार ॥ २३ ॥ जिन रँग विनय पढ़ाइवो जो सीखे होय सुजान। कारीगर की कोर है कोर न लग्यो पाषाण ॥ २४ ॥ धरम ध्यान ध्यावे नहीं रहे जो आरतमांहि। जिन रंग वह कैसे तरें प्रभु रंग रत्ता नांहिं ॥ २५ ॥ जिन रंग सोजीया भला जिस शिर यश के अङ्क। वह जीया किस काम का जिस सिर चढ़े कलङ्क ॥ २६ ॥ जिन रंग पंडित अति पढ्या भोजन बहु विधि कीन। भूषण पहिने भामिनी कोरस गोरस हीन ॥ २७ ॥ पूँजी अपनी पार की मांडे सब व्यापार। जिन रंग लेखे सांच है सोहू साहूकार ॥ २८ ॥ जिन रंग सभा सुहावतो जन मुख बोले बोल। ताको कबहू तनिक भरि घटे न तन को तोल ॥ २६ ॥ महिमा इण कलिकाल की जिन रंग सब जग जोय। मगण हु ते मारग लगे नगण रहे सब कोय ॥ ३० ॥ स सनेही बन्धन परे नि सनेही को मोक्ष। सिरि के कचकुं बांधिये नेह धर्यां कै दोष ॥ ३१ ॥ स सनेही दुखी ए हुवै सरन एको काम। जिन रंग तिलकों पीलिये

धरीये खल को नाम ॥ ३२ ॥ जिन रंग पूरत ही सदा पूरण होय न एह । विप्र, उदर, नरपति, अगनि, अन्त काजल निधि गेह ॥ ३३ ॥ दानशील तप तों भले जो हुवै भाव विशेष । जिन रंग जैसे ग्रह नवें भाव चक्र में देख ॥ ३४ ॥ शठ कुं शिक्षा दीजिये जिन रँग उलटी होय । जैसे नासा रहित कुं मुकर दिखावे कोय ॥ ३४ ॥ शैव भक्ति जैनी दया मुसलमान इतबार । जिन रंग जो तीनों मिले तो जीव लहे भव पार ॥ ३६ ॥ अपने घर में सब बड़े राव रङ्क लौं साच । जिन रंग जगत में ते बड़े जिनको मानहिं पांच ॥ ३७ ॥ पाप की बात विसार दे धर्म कथा सुणि लेह । जिन रंग जैसे बह चले कादों भांदू मेह ॥ ३८ ॥ साख रह्यां लाखा गयां फिर कर लाखां होय । लाख रहयां साखा गयां लाख न लब्भे कोय ॥ ३९ ॥ कीरत ज्युँ थिरती रहे विरती थिरती नांहि । विरती निरती बोलिये फिरती थिरती छांह ॥ ४० ॥ जैसे दीपक सदन में प्रगटत ज्योति प्रकाश । तैसे सदा शरीरमें जिन रंग जीव निवास ॥ ४१ ॥ जैसे काहु दृष्टि सों दीसे बालक चन्द । जिन रंग गुरु सुजाणिये तैसे नित्यानन्द ॥ ४२ ॥ जैसे खीरज खीर में घृत को होत रहास । तैसे सदा शरीर में जिन रङ्ग जीव निवास ॥ ४३ ॥ जैसे काठ पाषाण में पावक कहीयत पास । तैसे सदा शरीर में जिन रंग जीव निवास ॥ ४४ ॥ यूं करि यूं न कर यूं किया यूं न होय । जिन रंग एती बात में विरला बूझे कोय ॥ ४५ ॥ जिनका

रंग शरीर सुं जड़ चेतन नहिं फेर। ज्ञान दृष्टि प्रगटी नहीं तिनके सदा अँधेर ॥ ४६ ॥ अप्पा चेतन कुं गिणे पुद्गल है जड़ रूप। ज्ञान दृष्टि प्रगट हुवे जिन रंग सिद्धि सरूप। मिलीयो एक अपूरव पखवाली परभात। जिन रंग जिणनैं जोवतां गुण उपजीयो गात ॥ ४८ ॥ अपना भार न उठा सके और लेत पुनि सीस। सो पैंड़ क्यों पहुँचसी जप जिन रंग जगदीस ॥ ४६ ॥ जिन रंग सोच विचार के जाना थिर कछु नांहि। तातें आपा साध के गही तरक मन मांहि ॥ ५० ॥ जिन अपनो बल जान के कीनो कारज लोइ। जिन रंग तिनकी जगत में हार न कबहूँ होय ॥ ५१ ॥ जिन रंग जो कर सके तो करो जीव उपकार। जिन सुं दोउ होत है इरत परत उधार ॥ ५२ ॥ खल पद आइ खमाइ के उपमा दीजे ऊँच। तन तामें से जिन रंग तो मिटे न मन की खूँच ॥ ५३ ॥ तन मन धन दीजे सब ही कीजे बहुत उपाय। जिन रंग जो जैसी प्रकृति सो तैसी ठहराय ॥ ५४ ॥ जिन रंग जो जीव मैं सदा जग में होय उदास। तिनके माया मोह को पड़ै न कब हूँ पास ॥ ५५ ॥ कांटा राखे केतकी अरु नारंगी जाण। कांटा ई कांटा धरे जिन रंग किसे बखाण ॥ ५६ ॥ जिन रंग भोजन धन विषै जीवन रमणी जोय। इण सेती तिहुँ कालमें तृप्त न देख्यो कोइ ॥ ५७ ॥ खल माणसरी प्रीति जिन रंग छांह प्रभात। रूडी सज्जन रीति रीति जाणे छाया सांझ री ॥ ५८ ॥ जिन रंग मीठी गरज है अवर न मीठो कोइ। जब

जब निकसे है शीतला रासभ आदर होय ॥ ५६ ॥ दोषागम तें शसि अधम आवत सनमुख धार । जिन रंग रवि ज्युं सत्पुरुष देखत हीर रिझाई ॥ ६० ॥ धरम अपूरब जग करे तिणसे दुखित लोग । एक अक्षर जिन रंग तजे तो होवे सुकृत संयोग ॥ ६१ ॥ मुँहसेतीं लटपट करे मन में प्रीति न कोइ । जिन रंग हीया, हेज, सब करपर बैठत आइ ॥ ६२ ॥ बुरो करै चाहे बुरो धरे भलेपण की आस । जिन रङ्ग कुन्ड कृशान में करै कमल को वास ॥ ६३ ॥ काम जरयो भमरो भयो चँपक देख अनूप । जिन रंग भमरै क्यूँ तड्यो देख्यो शम्भु स्वरूप ॥ ६४ ॥ भेजो पति कुं भामिनी इक करंड करिपेस । जिन रंग तिन ऊपर लिखे चँपक भुजङ्ग महेश ॥ ६५ ॥ जिन रङ्ग वैर न कीजिये कन्टक सु भी कोइ । कब ही भांजै पाव में तब ही दुखदायी होय ॥ ६६ ॥ जिन रंग क्यूँ करि जानिये ऊँच नीच संसार । या तो चाल पिछाणिये या बोलण की बार ॥ ६७ ॥ सौतिन सों सोतिन कह्यो दर्पण ले मुख जोइ । सब श्रृँगार ते तो रचे नयन बड़े क्यूँ होइ ॥ ६८ ॥ जिन रंग अपणे काम को सावधान सब कोय । पर उपकारी जगत में ते विक्रम सम जोइ ॥ ६६ ॥ जिन रङ्ग कब हू न कीजिये जाण बडां की होड़ । श्याम वदन भई घूंघची जुडे न कनक की जोड़ ॥ ७० ॥ धर्म की बात रुचे नहीं पाप की बात सुहाइ । जिन रंग दाखां छारि के काग निबोरी खाइ ॥ ७१ ॥ जिन रंग सूरि कही गच्छ खरतर गुण जाण । दोहा बन्ध बहुत्तरी बांचे चतुर सुजाण ॥ ७२ ॥ इति ।

॥ दादा गुरु स्तवन ॥

कुशल गुरु तुम साहिब सुखदाई तुम साहिब० ॥ परतिख तेरो मैं दीठो परच्यो पल में पीड़ा गमाई। कुशल०। मानव दानव सहु कोई मानें दुनियां मांहि दुहाई। सोमवार पूनम दिन पूजत जिन घर होत बधाई। कुशल०। मालपुरे थारो थिर थानक दीपे युग प्रधान सवाई। चिन्ता चूरण आशा पूरण जिन रङ्ग सूरि सहाई। कुशल०। ३। इति।

॥ दादा देव का स्तवन ॥

दादो जी दीठां दौलत थाय, वांकी रे बेला न पडे दाव। पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ पूजो ॥ दादो जी तुरत गमावे पीड़, दादो जी भांजे सगली भीड़ ॥ पूजो १ ॥ पूनम पूनम दिन सोमवार, आय जुड़ें दादा दरबार । पूजो। पूजो केसर अगर कपूर, समरतां दादो होय हजूर ॥ पूजो० ॥ हां हो ॥ २ ॥ मुँह मांग्या बरसावें मेंह, दादो जो साधे तूठा नेह ॥ पूजो० ॥ दादो जी राजनगर दिवान, पूज्यां बोल चढ़े प्रमाण ॥ पूजो० ३ ॥ दादा जीरा सेवक होय, तेहने गंज न सक्के कोय ॥ पूजो० ॥ जिन रङ्गसूरि कहे कर जोडि, कौन करे दादा जी की होड़ ॥ पूजो। दादो जी परतिख देवता दादो देश दिवान ॥ ४ ॥

॥ दादा जी का स्तवन ॥

तुम पूजो श्री जिन कुशल सूरि, गुरुनामें सङ्कट जायें दूरि ॥ पू० १ ॥ पूनम पूनम ने सोमवार, दरसन देखी जे बार बार ॥ पू० २ ॥ छाजेहड़ बंसे जग विख्यात, जिल्हागर कहिये तसु तात ॥ पू० ३ ॥ जैतसिरि माता तणोरे नन्द, गुरू चन्द कुलंबर चन्द ॥ ४ ॥ प्रभु चरण कमल जिम भमर प्रीति, जिन रङ्ग कहे कर जोडि ॥ पू० ५ ॥ इति ।

॥ दादा गुरु स्तवन ॥

छत्रपति थांरे पांय नमैं जी सुर नर सारे सेव । ज्योति थांरी जग जागती जी दुनिया में परतिख देव ॥ १ ॥ हुँ तो मोहि रह्यो जी ह्मारा राज दादै रे दरबार ॥ हुँ ॥ केशर अँबर केवडो जी कस्तूरी करपूर । चँपो चन्दन राय चमेली भक्ति करूँ भर पूर ॥ हुँ २ ॥ पांगुलियानें पांव समापे जी आंधलियाने आंख । रूप हीणाने रूप देवे दादो पँख हीणानें पांख ॥ हु ३ ॥ चन्द पाटोधर साहिबोजी श्री जिन कुशल सूरिंद ॥ अष्ट प्रहर थाने ओलखूँजी रङ्ग घणें राजिंद ॥ हु ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दादा गुरु स्तवन ॥

कुशल गुरू कुशल करो भरपूर । सेवक जन मन वँछित पूरण समर्थो होत हजूर ॥ कुशल ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम

रस पूरण अशुभ हरण भय दूर। संघ उदय कर सद्गुरू मेरा विनबै श्री जिन चन्द्सूरि ॥ कुशल ॥ २ ॥

॥ अथ सज्झाय ॥

चाल–कौन गुरु कौन चेला।

साधो भाई अब हम कीनी ज्ञान सराफी जग में परगट कहाए। भव अनेक गांव सब तज के उत्तम कुल में आए ॥१॥ समकित हाट करी अति नीकी समता टाट विछाये। क्षमा गादी ऊपर चढ़ बैठे तकिया शील लगाए ॥ साधो २ ॥ तप मुनीम दीसे अति उत्तम संयम पारख राखे। धीरज विप्र तगादे भेज्यो सत्य दलालज भाषे ॥ साधो ३ ॥ शुद्ध भाव की या बटवारी कांटा सुघड़ सुधारा। दृढ़ वैराग्य का कीया तोला पाप तोल कीया न्यारा ॥ साधो ४ ॥ श्री जिन भजन किया रोजनामचा करुणा बही बणाए। जिन आज्ञा की रोकड राखी धर्म ध्यान बद्लायं ॥ साधो ५ ॥ मान मार के स्याही लाया तप की कलम बनाई। दर्शन ज्ञान चारित्र लिख श्री जिन चरण चढाये ॥ साधो ॥ गुरु उपदेश का किया अडेवा दीसे जमा सवाई। जिन रंग ऐसा विणज करत हैं मुक्त महानिधि पाई ॥ ७ ॥ इति।

॥ धर्म स्वरूप सज्झाय ॥

धर्म करोरे प्राणियां धर्म कियां सुख होसीरे। धर्म विहुणाजी बडा आगे दुर्गति लेसीरे ॥ धर्म० ॥ १ ॥ माहरो

माहरो तू करे ते तो सगलो खोटोरे। काया से हँस जुदा साथे फूटो लोटोरे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ डाभ अणी जल विन्दुवो ते तो ततखिण जाषेरे। जिम काया सुं जीवड़ो जावत, वार न लागेरे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ एक आरे बिहुँ उपना भरत बाहू दोऊ भाई रे। राज करण बिहुँ झूँझिया संसार ऐसी सगाई रे ॥ धर्म० ४ ॥ इण भव बेटा बेटडी घरणी ने घर कन्तोरे। परभव कोई न चालसी इम बोले भगवंतोरे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ एक चाल्यो बीजो चालसी तीजो चालन हारोरे। चेत सको तो चेत जो पीछे करसी पुकारोरे ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ धंधो कर धन जोडियो कौडी काम न आवेरे। पुण्य करोरे प्राणियां ते तो सुरपद पावेरे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ श्रेणिक सुत वैरी थयो कोणिक नामें एहवोरे। मार दिवाडं दिन प्रतें राज तणा बसि हुयारै ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ साधु तणी सेवा करो समरो श्री नवकारोरे। शक्ति साथे दान द्यो जो उतरो भव पारोरे ॥ धर्म ॥ ९ ॥ मन में ध्यान रूड़ो धरो निन्दा सगली टालोरे। रात्रि भोजन थे परिहरो समकित सूधी पालोरे ॥ १० ॥ धर्म॥ क्षमा दया मनमें धरो कर्म हुवे जेह ढीलोरे। रङ्ग सूरि इम वीनवें ते पामें शिव लाभोरे ॥ धर्म० ॥ ११ ॥ इति सज्झाय ॥

॥ सम्मेद शिखर स्तवन ॥

चलो चलो शिखर पर आज भवि जिन बंदिये ॥ च० ॥ अजितादिक प्रभु बीसें जिनेसर पूजा रचाई हूँ मैं आज

॥ भवि० ॥ १ ॥ बीसे टूंक की यात्रा करता जनम मरण दुख जाय ॥ भवि० ॥ २ ॥ लच्छमण पुर से श्रीसँघ हर्षे यात्रा करन चितलाय ॥ भवि० ॥ ३ ॥ संवत अठारे बानवें वर्षें माघ तेरस रविवार ॥ भवि० ॥ ४ ॥ श्री जिन चन्द्र कृपाकर प्रभु जी नंदी वर्द्धन गुण गाय ॥ भवि० ॥ ५ ॥

॥ अथ परमातमा छत्तीसीं ॥

परमदेव परमातमा परम ज्योति जगदीस। परम भाव उर आन के प्रणमत हों निसदीस ॥ १ ॥ एक जु चेतन द्रव्य है तिनमें तीन प्रकार। बहिरातम अन्तर आतमा कहे परमानम पद सार ॥ २ ॥ बहिरातम ताको कहै लखे न ब्रह्म स्वरूप। मगन रहे पर द्रव्य से मिथ्यावन्त अनूप ॥ ३ ॥ अन्तरात्मा जीव सों सम्यग दृष्टि होय। चौथे अरु पुनि बार में गुण थानक ले सोय ॥ ४ ॥ परमातम पद ब्रह्म को प्रगट्यो शुद्ध स्वभाव। लोकालोक प्रमाण सब झलके जिनमें आय ॥ ५ ॥ बहिरातम भाव तजी अन्तर आतमा होय। परमातम पद भजत हैं परमातम सोई होय ॥ ६ ॥ परमातम सोही आतमा और न दूजो कोय। परमातम को ध्यावते यह परमातम होय ॥ ७ ॥ परमातम यह ब्रह्म है परम ज्योति जगदीस। परसों भिन्न निहारिये जो अलख सो ही ईश ॥ ८॥ जो परमातम सिद्ध मैं सो ही यां मन मांहि। मोह मैल दृग लागि रह्यो ताते सूझत नाहिं ॥ ९ ॥ मोह मैल रागादि को

जो छिन कीजे नाश। ताछिन यह परमातमा आपहि लहे प्रकाश ॥ १०॥ आतम सो परमातमा परमातम सो सिद्ध। बीच की दुविधा मिट गई प्रगट भई निज ऋद्धि ॥११॥ मैं ही सिद्ध परमातमा मैं ही आतम राम। मैं ही ज्ञाता ज्ञेयको चेतन मेरो नाम ॥१२॥ मैं अनंत सुखको धनी सुखमें मोहि सुभाय। अविनाशी आनन्दमय सो ही त्रिभुवनराय ॥१३॥ शुद्ध हमारो रूप है शोभित सिद्ध समान। गुण अनन्त करि संयुत चिदानन्द भगवान ॥ १४ ॥ जैसा शिव क्षेत्र में बसे तैसा या मनमांहि! निश्चय दृष्टि निहारतां फिर रंच कछु नांहि ॥ १५ ॥ करमन के संयोग तै भए तीन प्रकार। एक आतमा द्रव्य को कर्म न टारनहार ॥ १६ ॥ कर्म संघाती आदि के जोर न विसात। पाई कला विवेक की राग द्वेष बिन जात ॥ १७ ॥ कर्मन के जरे राग जरे राग जरे सब जर जाय। प्रगट होय परमातमा भैया सुगम उपाय ॥ १८ ॥ परमातम पद को धनी रङ्क भयो बिललाय। राग द्वेष की प्रीति सों जनम अकारथ जाय ॥ १९ ॥ राग द्वेष से प्रीति तुम भूल करो जी न रंच। परमातम पद ढांकि के तुम्हें कीनो मतिमन्द ॥ २० ॥ जप तप संयम भला राग द्वेष जो नांहि। राग द्वेष सब जागते ये सब सोये जांहि ॥ २१ ॥ राग द्वेष के नाश से परमातम परकास। राग द्वेष के भास से परमातम पद नास ॥ २२ ॥ जो परमातम पद चहे तो तू राग निवार। देख संयोगी स्वामि को अपने हिये विचार ॥ २३ ॥ लाख बात की बात

ये है तुमको दई बताय। जो परमातम पद चहे राग द्वेष तजो भाई ॥ २४ ॥ राग द्वेष के त्याग बिन परमातम पद नांहि। कोटि कोटि जप तप करो सबै अकारथ जांहि ॥ २५ ॥ दोष आतमा को यह है राग द्वेष को संग ॥ जैसे पास मजीठ के वस्त्र और ही रंग ॥ २६ ॥ जैसे आतम द्रव्य के राग द्वेष को पास ॥ कर्म रङ्ग लागत रहे कैसे लहे प्रकास ॥ २७ ॥ इन कर्मन को जीतवो कठिन बात है वीर। जर खोदे बिन नहीं मिटे दुष्ट जाति बे पीर ॥ २८ ॥ लल्ला पत्ता के किये ये मिटने के नांहि। ध्यान अग्नि परकास तैं होम देवो तिन मांहि ॥ २९ ॥ ज्यों दारू के गंज कों नर नहीं सके उठाय। तनिक आग संयोग ते इक छिन में उड़ि जाय ॥ ३० ॥ देह सहित परमातमा यह अचरज की बात। राग द्वेष के त्याग से कर्म शक्ति जर जात ॥ ३१ ॥ परमातम के भेद द्वय निखिल सब परमाण। सुख अनन्त में एक से कहिवे को द्वय थान ॥ ३२ ॥ भैया वह परमातमा सो ही तुम्हरे मांहि। अपनी शक्ति संभारि के लखो वेग दे ताहि ॥ ३३ ॥ काहे को भटकत फिरे सिद्ध होण के काज। राग द्वेष को त्याग दे भैया सुगम इलाज ॥ ३४ ॥ नृपति विक्रमादित्य को सत्रह सै पचास। मारगसिर रचना कही प्रथम पत्त हुंति जास ॥ ३५ ॥ राग द्वेष को त्याग के धर परमातम ध्यान। ज्यों पावे सुख शाश्वते भैया इम कल्याण ॥ ३६ ॥ इति।

॥ मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

अथ राग आसावरी ।

मैं तो जाऊँ वारहजारीरे भवि जिन मुनिसुव्रत सुख कारीरे। अपराजितसे चव के प्रभु जी निज इच्छाएं धारी ॥ सावन सुदी पूनम तिथि दिवसें आए हैं कूख मझारीरे भवि जिन मु० ॥ १ ॥ भूप सुमित्र राजगृही नगरें उत्तम कुल अवतारीं ॥ है जननी पद्मावती राणी कृष्ण वर्ण वपुधारीरे ॥ भविजिन ॥ २ ॥ ज्येष्ठ वदि आठम तिथि उत्तम श्रवण नक्षत्र विचारी। बीस धनुष तनु मकर रासि धर लंछन कूर्म पे वारीरे ॥ भविजिन ॥ ३ ॥ सप्त सहस्र पंच शत बरसें आयु कुमार निहारी। बरस पंच दश सहस राजकर भयो जगत यश धारीरे ॥ भविजन ॥ ४ ॥ घाति अघाति कर्म क्षयकारक शुभ योगें अनुसारी। फाल्गुन शुक्ल सुद्वादश कीनों संयम अँगीकारीरे ॥ भविजिन ॥ ५ ॥ अपराह्न प्रहरें जिनवर जी नील गुहा बन भारी। कृष्ण द्वादशि फाल्गुन की पाम्यो केवल ज्ञान मुरारीरे ॥ भविजिन ॥ ६ ॥ सप्त सहस्र पांच से बहत्तर कर तप कठिन करारी। ज्येष्ठ शुक्ला नवमी शिव पहुंते आयु तीस हजारीरे ॥ भविजिन ॥ ७ ॥ षोडश त्रिक शतक दश द्वादश चैत्र शुक्क शुभचारी। पंचमी तिथि कल्याण सूरि जिन निरख निरख बलिहारीरे ॥ भविजिन ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

॥ स्तवन ॥

हाथ जोड के अरज करूँ मेरी अरजी मानो जी हा० ॥ काल अनंत मोहे भटकत बीत्यो अब तो तारो जी हा० ॥ १ ॥ अधम उधारण हो प्रभु तुम ही मेरी ओर निहारो जी हा० ॥ २ ॥ तुम बिन देव नहीं ऐसा कापे जाय पुकारूँ जी हा० ॥ ३ ॥ सूरि कल्याण की अरज यही है भव विपति निवारो जी ॥ ४ ॥ इति ।

॥ शांति जिन स्तवन ॥

शांति जिनंद गुण गावो मना शिव रमणी सुख पाओ तुम शांति ॥ मन वच काय कपट तज आतम, शुद्ध भावना भावो मना ॥ शांति० ॥ १ ॥ दया धर्म अरु शील तपस्या, करि सब कर्म खपावो मना ॥ शांति० ॥ २ ॥ माया मोह लोभ पर निन्दा, विषय कषाय नसावो मना ॥ शांति० ॥ ३ ॥ जगवन्दन अचिरानन्दन को, निश दिन ध्याय रिझावो मना ॥ शांति० ॥ ४ ॥ जिन पद कज मधुकर जाते, उत्तम ध्यान लगावो मना ॥ शांति० ॥ ५ ॥ जिन कल्याणसूरि प्रभु चरणें, वेर वेर लय लावो मना ॥ शांति० ॥ ६ ॥

॥ शांति जिन स्तवन ॥

राग भैरवी ।

संखेश्वर पास जिनेश्वर मे टप ॥ ए देशी ॥ श्री शांति जिन देव अरज अवधारिये । तुम त्रिभुवन के तात पतित जन

तारिये । सर्वार्थ से प्रभु आप यहां अवतर्या, सब जग मण्डल हर्षथया आनन्द भर्या ॥ १ ॥ विश्वसेन जसु तात मात अचिरा तणें जन्म्यां श्री महाराज वंश इक्षु गिणें, दीक्षा केवल नाण कल्याणक शुभ लहि सोलम जिनवर देव पंचम चक्री सही ॥ २ ॥ लंछन चरण कुरंग रहे तसु सेवमें सोवन वर्ण शरीर धनुष चालीस में, गजपुर मांहे वेद कल्याणक जानिये । शिखर सम्मेत पे जाय सिद्ध पद मानिये ॥ ३ ॥ नन्दा नयन नव इन्दु संवत् विक्रम तणों या कवि दिने नाम प्रतापहि चन्द्र थयो इह जगत में । पारसान तसु गोत्र रहें इन्द्रप्रस्थ में ॥ ४ ॥ थाप्या बिम्ब उदार शांति जिन देवता आतम निर्मल काज करो नित सेवना । करुणा सिन्धु कृपाल कृपा अब कीजिये भव दुख मेटो अमर पद दीजिए ॥ ५ ॥ बृहत भट्टारक गच्छ खरतर में सोहतो श्री जयशेखरसूरि सकल जन मोहतो, श्री जिन सूरिकल्याण कहें कर जोडी ने दीजे अविचल वास करम फंद तोड़िने ॥ ६ ॥ इति

॥ नवपद स्तवन ॥

राग मारू ।

तीरथ नायक जिन वरूरे अतिशय जास अनूप । सिद्ध अनन्त महागुणीरे परमानन्द स्वरूप ॥ भविक मन धार ज्योरे धरज्यो नव पद ध्यान ॥ भवि० ॥ टेक ॥ १ ॥ श्री आचारज गण धरूरे गुण छत्तीस निवास । पाठक पद धर

मुनिवररे श्रुतदायक सुविलास ॥ २ ॥ भवि० ॥ सुमति गुपतिधर शोभनारे साधु सुमतिवंत। सम्यग दर्शन सुंदररे ज्ञान प्रकाश अनन्त ॥ ३ ॥ भवि० ॥ संवर साधु ने चरण छेरे तप उत्तम बिधि दोय। ए नवपदना ध्यानथीरे निरुपाधिक सुख होय ॥ ४ ॥ भवि० ॥ अमृत सुमधुर धर्मनोरे मूल ए नवपद जांण। अविचल अनुभव कारणेंरे नित प्रणमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति।

॥ अथ शारदाष्टक ॥

ॐ ऐं श्रीं मंत्र रूपे विबुध जनन ते देव देवेंद्र वंदे चं चं चंद्रावदा ते क्षिपति कलिमल हारिणी हारि गौरे, भीमे भीमाट्ट हास्ये भव भय हरणै भैरवे भीर वीरैः ह्रां ह्रीं हूंकार नादे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवः ॥ १ ॥ हा पद्मे बीज गर्भे सुरवर रमणी चंचितानेक रूपे यः कोपं विंभ मध्ये धरति वरधरे योगिनां योग मार्गे हंशा सः स्वर्गजेन्द्रैः। प्रति दिन मणै प्रस्थितालापपाधै दैत्यैन्द्रैर्गीयमाने मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवः ॥ २ ॥ क्लां क्लीं क्लौं धेय रूपे हनि विषम विषं स्थावरं जंगमं वा संसारे संश्रितानास्त्वचरण युगं सर्व कालं नराणां। अव्यक्तं व्यक्त देहे प्रणति नरवर ब्रह्म रूपं स्वरूपं, ऐं क्लीं योग मध्यमे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवः ॥ ३ ॥ दैत्यैर्दैत्यारि नाथैर्नमति पदयुगैर्भक्ति युक्ति त्रिसन्ध्यां सर्वैर्जैवैविनम् सुरवर नर गणैः संस्तुताय पैश्च।

आं ऐं उँ अं अः अमृदुतर स्वराः अंब योगीयमानैः सा देवि नित्यं धेयं मम मनसि शारदे तिष्ठ देवः ॥ ४ ॥ संपूर्ण व्यंग शोभा शशिकर सदृशां दास बिम्बात् प्रसूतै स्वस्त्यै रम्यै शुकान्तै द्विजकर निकरैश्चन्द्रिकाकार भासैः । अस्माकीनं सुरश्चादिनमणिः सततं कल्मषं त्तालयन्ति स्वां स्वैं स्वौं स्वः मंत्रपूते मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवः ॥ ५ ॥ भावे पद्मासन्नस्थे जिनमुख निश्रृतं पद्महस्ते प्रशस्तैः प्रां प्रैं प्रौं प्रः पवित्रे हर २ दुरितं दुष्टजं दुष्ट चेष्टं वाचाला भीष्ट सक्ता । त्रिदश युवतिभिः प्रत्यहं पूज्यपादे चंडे चंडैः कराले मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवः ॥ ६ ॥ नम्रीभूत त्तीसां प्रचर चिर मुग्धा घृष्ट पादारविंदैः पद्मासे पद्मनेत्रे गज गति गमने हंस याने प्रयाणे । कीर्तिः श्री बुद्धिः शक्ते जय विजय धृते गोरी गांधारी युक्ते धेये धेयस्य रूपे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवः ॥ ७ ॥ विद्युज्वालांशु दिप्तां प्रवर मणि मयि मक्तमाला कराग्रे रम्या मूर्त्या धरति दिन मणिरद्भुता मष्टकं शारदे देवः । नागेन्द्रै इन्द्रचन्द्रैः मनुज मुनिगणे संस्तुताराधताया कल्याणं सा च दिव्यं दिशतु मम सदा निर्मलं ज्ञान रत्नं ॥ ८ ॥

॥ नेमनाथ स्तवन ॥

नेमनाथ तेरे चरण कमल की मैं जाऊँ बलिहारी जी ॥ नेम० ॥ देश कुशावर्त्त सोरीपुर में चवन जन्म आनन्दकारी जी ॥ चौसठ इन्द्र करे तेरी महिमा, गुण गावे सुरनारी जी

॥ १ ॥ देव रचित द्वारिका नगरी में भए प्रभु संयमधारी जी गढ किरनारपे केवल पायो सकल संघ सुखकारी जी ॥ २ ॥ अष्ट कर्म को दूर करीने हुयो पद अनाहारी जी ॥ कहे जिन रत्न बनाओ मुझको शिव लक्ष्मी अधिकारी जी ॥ ३ ॥ इन्द्रप्रस्थ नगर अति उज्वल दादा स्थान मनोहारी जी ॥ रस सिद्धि नंद इन्दु शुभ वर्षे भई प्रतिष्ठा भारी जी ॥ ४ ॥

॥ श्रीमालों की गोत्र संख्या ॥

दादा जी श्रीजिन दत्तसूरि जी महाराज के प्रतिबोधित श्रीमाल जाति उनके गोत्र श्रीजिन कल्याणसूरि जी महाराज इस प्रकार उद्धृत करते हैं—

शुद्ध ध्यान विधान निधान समान ज्ञात क्रयाचार समावर्जित द्विपंचाशत् क्षेत्रपालैः चित्र विचित्र तंत्र पवित्र सूरि मंत्र संसाधित चतुः षष्ठि योगिनी चक्रैः सन्नय जय समुदय विद्याबल वशीकृत सपरिकर पंच पीरैः सुधादेश्य गुण निवेश निरभि निवेश्य निरुप क्लेश श्रीमदाप्तोपदेश देशना प्रतिबोधित श्रावक श्राविका लक्षैः सुविहित चक्र चूडामणिभिः देवता प्रदत्त युग प्रधान पदवी धारिभिः श्रीखरतरगच्छ नायक श्री जिनदत्तसूरिभिः प्रतिबोधिता । श्रीमाल ज्ञातिस्तत्र गोत्र नामानि लिख्यंते ।

यथा पापड १ खारेड २ ढोर ३ पारसाण ४ नागड़ ५ सींधड़ ६ महूतीया ७ भांडिया ८ भाडंगा ९ टांक १० सागी-

याण ११ राकीयाण १२ तांबी १३ फोंफलीया १४ खोवड़ा १५ खूसडीया १६ मोघा १७ काठ १८ पल्होड़ १६ घेवरिया २० बोहरा २१ मूसल २२ पटोलिया २३ पचोलिया २४ तबल २५ धांधीया २६ बद्लिया २७ बिहूलिया २८ पातीयाण २६ गभाणीया ३० महमवाल ३१ जूनीवाल ३२ भैंसवाल ३३ पेटवालिया ३४ लडुवाल ३५ जूड ३६ जट ३७ गलकटा ३८ डूंगरिया ३६ फूसलाणां ४० बिनालिया ४१ झाडचूर ४२ विवनालिया ४३ फांफू ४४ लठाहल ४५ मँडोठिया ४६ माघल- पुरी ४७ काला ४८ भोघा ४६ हेडाउ ५० हींगड़ा ५१ संभोतिया ५२ कुंगडकीया ५३ दुसाज ५४ कुकड़ीया ५५ माथुर ५६ भुसाड ५७ मुहता ५८ चींचड़ ५६ खायड ६० धूपड ६१ पारड ६२ खोर ६३ जरगड ६४ वैद ६५ डूंडा ६६ चँदेरिया ६७ बारो- लिया ६८ बरढीया ६६ भालोठीया ७० मरहठीया ७१ ठाकुरिया ७२ साहुआण ७३ नबरँग ७४ गुजर ७५ बुदाणिया ७६ कोडि- याण ७७ मरदल ७८ नींबहडा ७६ अकदुधीया ८० कटारीया ८१ माणहडा ८२ सींघो ८३ नभेडिया ८४ नाचणीया ८५ वायड ८६ छकडीया ८७ वायसीया ८८ अगासीया ८६ सांग- रीया ६० पचासीया ६१ चरनालिया ६२ बहकटा ६३ घोवडीया ६४ गिलाहरीया ६५ सेठीया ६६ गढीया ६७ वांकणां ६७ रांडीका ६६ बूडीया १०० सीकरीया १०१ । इति

अतिशय निर्मल साधु कृपा विद्यावल गच्छ खरतर गुरु प्रति बोधित प्रगट वृद्ध खरतर श्रीमाल गोत्र

संख्याऽभूत । रहावर्गी १ बीजावर्गी २ खेतावर्गी ३ ॥ इति जातिअभूत ॥

॥ कडखानी छन्द ॥

करत कल्याण कल्याण आतम तणों रूप कल्याण को देहधारी गोत्र पालावत लक्ष्मणपुर नें विषें हुयो कुल चन्द आनन्दकारी ॥ १ ॥ किशन चन्द तात अरु मात महिमा तवें हर्ष पाम्यो थयो सुख भारी अधिक उद्योत निश दिवस जग दीपतो धर्म धारी ॥ २ ॥ तज निज नार घरबार तज जिन भजे योग साधे महा ब्रह्मचारी भवि जन निशि दिवस पद वंदतां सकल सुख सम्पदा होत सारी ॥ ३ ॥ सूरि छत्तीस छत्तीस गुण धारणों अधिक ओपमा दीपे अङ्ग सारी जोर युगपान कवि राम की इति कहत सूरि कल्याण जिन अर्ज हमारी ॥ ४ ॥ इति

—स....मा....प्त—